

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 25, यिर्मयाह 30-33, सांत्वना की पुस्तक और निर्वासन के बाद की स्थिति

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 25, यिर्मयाह 30-33, सांत्वना की पुस्तक और निर्वासन के बाद की स्थिति है।

हमारे पिछले भाग में, हमने यिर्मयाह 30 से 33 में सांत्वना की पुस्तक के बारे में बात की थी।

और मुझे आशा है कि हम कुछ अर्थों में पुनर्स्थापना के शक्तिशाली वादे, ईश्वर की कृपा की सुंदरता को देखने में सक्षम थे, कि प्रभु के भयंकर क्रोध के बाद यहूदा पर ये सभी निर्णय लागू हुए जिनका वर्णन यिर्मयाह ने हमारे लिए किया है, यह अद्भुत भी है पुनर्स्थापना का वादा जहां प्रभु अतीत की स्थितियों को उलटने जा रहे हैं। निर्वासन के बजाय, सुरक्षा और आशीर्वाद मिलने वाला है। रोने की जगह खुशियां मनाई जाएंगी।

यहूदा के घाव के लिए कोई उपचार नहीं होने के बजाय, पूर्ण उपचार और शांति होने वाली है। और बस एक सुंदर, भगवान की कृपा और दया, करुणा और संपूर्ण धर्मग्रंथ की सबसे सुंदर तस्वीरों में से एक। हम इस सत्र में यिर्मयाह 30 से 33 तक देखना जारी रखेंगे, कुछ विशिष्ट वादे जो सांत्वना की पुस्तक में दिए गए हैं।

लेकिन हम इस खंड, या अध्यायों के इस समूह को यिर्मयाह की पुस्तक के दूसरे भाग के अध्याय 26 से 45 में भी रखने जा रहे हैं, और यह कैसे शाब्दिक रूप से धर्मग्रंथ के इस बड़े हिस्से में फिट बैठता है। याद रखें कि वह खंड समग्र रूप से यहूदा की अवज्ञा की कहानी है। तथ्य यह है कि उन्होंने परमेश्वर का वचन नहीं सुना।

और इसलिए यह अनुच्छेद पुनर्स्थापना का वादा कैसे करता है, कि भविष्य में, लोग प्रभु की आज्ञा का पालन करने में सक्षम होंगे, और उन्हें फिर कभी न्याय का अनुभव नहीं होगा? यह यहाँ क्यों है? और यह पुस्तक के इस विशेष खंड के बाकी हिस्सों के साथ कैसे फिट बैठता है? कुछ हद तक, मुझे लगता है कि यिर्मयाह 30 से 33 का पुस्तक में स्थान इस तथ्य के कारण है कि इसके अंतिम लेखक और संपादक, यिर्मयाह बारूक, या जो भी पुस्तक के अंतिम रूप के लिए जिम्मेदार है, वह निर्णय के संदेश को उजागर करना और जोर देना चाहता है। . तो, इसे केंद्र में रखा गया है।

इसे प्रमुख स्थान पर रखा गया है। आपके पास पुस्तक के सामने की ओर निर्णय है और पुस्तक के पीछे की ओर निर्णय है। लेकिन याद रखें कि बीच की चीज़ पर ध्यान केंद्रित रखें।

यिर्मयाह की पुस्तक में कथानक का अंतिम समाधान यह है कि प्रभु टूटे हुए रिश्ते को बहाल करने जा रहे हैं। पुस्तक की शुरुआत में बेवफा पत्नी भगवान को अपने पति के रूप में गले लगाने जा रही है और जब भगवान पुनर्स्थापना का अंतिम कार्य करेंगे तो वह हमेशा उनके प्रति वफादार रहेगी। बेवफा विद्रोही पुत्र, जो व्यवस्थाविवरण के कानून के अनुसार मौत का हकदार होगा, जो अपने पाप को स्वीकार करने से इनकार करता है, जो प्रभु के पास वापस आने से इनकार करता है, जो कबूल करने में भ्रमित है, और पूरी किताब में सभी प्रकार की गलत बातें कह रहा है भगवान के लिए जिसे भगवान सुनना नहीं चाहते।

अंततः, जब वह पश्चाताप करता है, तो वह सही बातें कहेगा और प्रभु को उसी तरह से जानेगा और उससे प्रेम करेगा जैसा उसने बनाया है। तो, इसका वह पहलू है। लेकिन याद रखें कि यिर्मयाह की पुस्तक के दूसरे भाग में, जिस पुस्तक के बारे में हमने बात की है उसके चारों ओर या पुस्तक के इस विशेष भाग के चारों ओर एक यहोयाकिम प्रेम है।

हमारे पास अध्याय 26 से 35 में एक पैनल है जो हमें एक खंड देता है और अवज्ञा, विद्रोह और इस तथ्य को दिखाता है कि यहूदा ने पश्चाताप करने और न्याय से बचने का अवसर खो दिया। इसके अंत में, जीवन का अनुभव करने वाले एकमात्र लोग रेचाबाइट्स, यह अस्पष्ट समूह हैं। यिर्मयाह 30 से 33 उस पहले पैनल में है।

यह हमें याद दिलाता है कि भले ही यिर्मयाह के जीवन और सेवकाई में, केवल एक छोटा, अस्पष्ट अल्पसंख्यक था जिसने जीवन का अनुभव किया, उस समूह का वास्तव में इस्राएल राष्ट्र के दीर्घकालिक इतिहास से कोई लेना-देना नहीं है। इस सारी अवज्ञा और विद्रोह के साथ, पहले पैनल में भी एक वादा है कि प्रभु अंततः इस्राएल के लोगों को बहाल करने जा रहा है और उनके साथ किए गए वाचा के वादों को पूरा करेगा। अपने जीवन और समय के दौरान यिर्मयाह के सेवकाई में, रेकाबियों को एक वादा दिया गया है।

उनके पास प्रभु के सामने खड़े होने के लिए कभी भी एक आदमी की कमी नहीं होगी। लेकिन पूरे राष्ट्र के लिए वास्तव में उत्साहजनक बात यह है कि यिर्मयाह अध्याय 33 में, सांत्वना की पुस्तक के भीतर, यही वादा दाऊद से किया गया है। दाऊद के पास कभी भी एक आदमी की कमी नहीं होगी।

और लेवीय पुजारियों, लेवियों, के पास प्रभु के सामने खड़े होने के लिए कभी भी एक आदमी की कमी नहीं होगी। अंततः इसका राष्ट्रीय महत्व बहुत बड़ा है, जो रेकाबियों के मामले में सच नहीं है। अध्याय 36 से 45 में हमारे पास दूसरा पैनल है।

याद रखें कि पैनल यिर्मयाह के स्कॉल को काटने से शुरू होता है। यहोयाकीम के दिनों में संभावना है, अगर लोग जवाब देंगे, अगर वे आज्ञा मानेंगे, अगर नेता भगवान की ओर मुड़ेंगे, तो शायद बेबीलोन का संकट वास्तव में जलने और सामने आने से पहले भगवान नरम पड़ जाएगा। लेकिन यहोयाकीम भगवान की ओर नहीं मुड़ता।

पैनल का दूसरा भाग पहले भाग की तरह ही मूल कथन प्रस्तुत करने जा रहा है। उन्होंने राष्ट्रीय आशीर्वाद का अनुभव करने का अवसर खो दिया। इस भाग के अंत में मिस्र में शरणार्थियों का निर्णय है।

और जीवन और मुक्ति का एकमात्र वादा एक अकेले व्यक्ति, बारूक को दिया गया है। लेकिन अध्याय 26 से 45 के दूसरे पैनल में यह भी है कि निर्वासन के बाद यहूदा में क्या हुआ। अध्याय 39 में यरूशलेम शहर के पतन के बाद, उस बिंदु से आगे यिर्मयाह के जीवन और मंत्रालय में क्या घटनाएँ घटित होती हैं? यिर्मयाह का मंत्रालय समाप्त नहीं होता है। यिर्मयाह की पुस्तक 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के पतन के साथ समाप्त नहीं होती है।

हालाँकि कई मायनों में यह चरमोत्कर्ष घटना है। ऐसा प्रतीत होता है कि यिर्मयाह की सेवकाई उसके बाद कम से कम कई वर्षों तक जारी रही। और अध्याय 40 से 43 में घटनाओं की एक श्रृंखला है जो हमें निर्वासन के तत्काल बाद की स्थिति बताती है।

तो, हमारे यहोयाकिम ढाँचे के बारे में सोचते हुए, अध्याय 26 से 45 में मौजूद दो पैनलों के बारे में सोचते हुए, कुछ मायनों में हम यिर्मयाह 30 से 33 और यिर्मयाह 40 से 43 के बीच एक समानता और एक पत्राचार देख सकते हैं। हालाँकि पत्राचार में समानता है अत्यधिक विरोधाभास में से एक. अध्याय 30 से 33 में, हमारा वादा है कि प्रभु इस्राएल के भाग्य को पुनर्स्थापित करेंगे।

निर्वासन के बाद के परिणामों को देखते हुए और भगवान अंततः लोगों के लिए क्या करने जा रहे हैं, वे आशीर्वाद जो वे भविष्य में कभी अनुभव करेंगे जब भगवान इस बहाली को लाएंगे। हालाँकि, अध्याय 40 से 43 में हमारे पास निर्वासन के तत्काल बाद का परिणाम है। 30 से 33 वह है जो अंततः परमेश्वर उस दिन और भविष्यवक्ताओं में उस दिन, अंतिम दिनों में, या उस भविष्य के समय में करने जा रहा है।

यह कब घटित होगा, आप जानते हैं, यह अनिश्चित है। लेकिन अध्याय 40 से 43 में हमारे पास यह है कि जब यिर्मयाह अभी भी जीवित है, तो निर्वासन के तुरंत बाद यहूदा में क्या हो रहा है? हमारे पास अत्यधिक विरोधाभास की तस्वीर है। अध्याय 30 से 33 इस महान आशीर्वाद को चित्रित करने जा रहे हैं जहाँ लोग प्रभु के पास वापस आते हैं, जहाँ वे प्रभु के आज्ञाकारी होते हैं, जहाँ वे भूमि में रहने के सभी आशीर्वादों का अनुभव करते हैं।

यह वह तस्वीर नहीं है जो हम अध्याय 40 से 43 में देखते हैं। लोग निर्वासन से तबाह हो गए हैं। गरीब लोग मूलतः वही हैं जो वहाँ बचे हैं।

वादा की गई भूमि के आशीर्वाद का आनंद लेने के बजाय, अंततः, वे मिस्र जा रहे हैं। ईश्वर के प्रति वफादार और आज्ञाकारी होने के बजाय, वे उस अवज्ञा को जारी रखेंगे जिसके कारण सबसे पहले निर्वासन का फैसला आया था। इसलिए, मुझे लगता है कि अध्याय 26 से 45 में इस दो-पैनल संरचना का एक हिस्सा, उद्देश्य का एक हिस्सा 30 से 33 में निर्वासन के बाद दीर्घकालिक अंतिम वादों की तुलना यिर्मयाह और लोगों के साथ काम कर रहे अल्पकालिक वास्तविकताओं से करना है। अध्याय 40 से 43 में निर्वासन के तत्काल बाद।

ठीक है, अब, इसके लिए मंच तैयार करने के लिए, मैं हमें याद दिलाना चाहता हूँ, या थोड़ा और ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, पिछले व्याख्यान से आगे बढ़ते हुए कि इस भविष्य के उद्धार के समय में कौन सी विशिष्ट चीजें हैं, परमेश्वर ने इस्राएल को क्या विशिष्ट वादे दिए हैं? पहला विशिष्ट वादा जो मैं उजागर करना चाहूँगा वह यह है कि यिर्मयाह लोगों से कहता है कि परमेश्वर उन्हें उनके निर्वासन से वापस देश में ले जाएगा, और वे उन बर्बाद शहरों का पुनर्निर्माण करेंगे जिन्हें बेबीलोन की सेनाओं ने नष्ट कर दिया था। हमारे पास अध्याय 30, श्लोक 18 में इस पुनर्निर्माण की एक तस्वीर है। इस प्रकार प्रभु कहते हैं, देखो, मैं भाग्य को बहाल करूँगा।

30 से 33 के लिए यह मुख्य अभिव्यक्ति है। मैं याकूब के तम्बुओं का भाग्य पुनः स्थापित करूँगा और उसके निवासों पर दया करूँगा। शहर को उसके टीले पर फिर से बनाया जाएगा, और महल वहीं खड़ा रहेगा जहाँ वह पहले था।

उनमें से धन्यवाद के गीत और उत्सव मनाने वालों की आवाजें निकलेंगी। मैं उन्हें बढ़ाऊँगा, और वे कम न होंगे। मैं उनका आदर करूँगा और वे छोटे न होंगे।

तो, लोग बड़े और असंख्य होने जा रहे हैं, और एक चीज़ जो उन्हें खुश करने वाली है वह है प्रभु का उन्हें अपनी भूमि पर वापस लाना। वे भूमि की प्रचुरता और समृद्धि का आनंद लेने जा रहे हैं, और वे उन शहरों और दीवारों का पुनर्निर्माण करने में भी सक्षम होने जा रहे हैं जिन्हें बेबीलोनियों ने तोड़ दिया है। अध्याय 31, श्लोक 38 से 40 में, वे यरूशलेम शहर और पूरे शहर का पुनर्निर्माण करने जा रहे हैं।

यह सब प्रभु के लिये पवित्र और पवित्र हो जाएगा। आपके पास हिन्नोम की घाटी और मूर्तियों की पूजा के लिए समर्पित स्थान जैसे ये पापी स्थान हैं जिन्हें भगवान निर्वासन के कारण शवों के ढेर में बदलने जा रहे हैं। परन्तु यरूशलेम पुनः स्थापित होने जा रहा है, और यह प्रभु के लिये पवित्र हो जायेगा।

दूसरा वादा जिसे मैं सात्वना की पुस्तक में एक विषय के रूप में उजागर करता हूँ, वह यह है कि प्रभु मुक्ति का कार्य करने जा रहे हैं जिसे दूसरे पलायन के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इज़राइल के इतिहास की शुरुआत में, पुराने नियम में मुक्ति का महान कार्य पलायन है। भगवान उन्हें बंधन से बाहर निकालते हैं।

भगवान उन्हें एक विदेशी भूमि से बाहर ले जाते हैं और भगवान उन्हें वादा किए गए देश में लाते हैं। परमेश्वर के उद्धार के कार्य का पैटर्न पूरे उद्धार के इतिहास में एक पैटर्न होने जा रहा है, जहाँ भगवान मुक्ति के कई कार्य करते हैं और निर्वासन से वापसी करते हैं और भगवान द्वारा अपने लोगों की अंतिम बहाली दूसरा पलायन होने जा रही है। अब हम इसे यशायाह की पुस्तक में भी देखते हैं।

बस मंच तैयार करने के लिए, विशेष रूप से यशायाह के दूसरे भाग में, इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि यह दूसरा पलायन इतना शानदार होने वाला है कि लोग पहले पलायन के बारे में भी भूल जाएंगे। यह छुटकारा परमेश्वर ने लोगों को मिस्र से बाहर लाते समय जो किया था,

उससे भी बड़ा कुछ होने जा रहा है। यशायाह का कहना है कि कई कारणों से यह पहले पलायन से भी बड़ा पलायन होगा।

पहली बात, प्रभु उन्हें केवल मिस्र या किसी एक देश से बाहर नहीं निकालेंगे। प्रभु उन्हें कई स्थानों से बाहर निकालेंगे जहाँ उन्हें बंदी बनाकर रखा गया है और निर्वासित किया गया है। दूसरी बात जो इसे और भी बड़ा पलायन बनाएगी, वह यह है कि लोगों को बेबीलोन को उस तरह से जल्दबाजी में छोड़ने की ज़रूरत नहीं होगी जैसे उन्होंने मिस्र छोड़ते समय किया था।

याद रखिए, उन्होंने अपनी रोटी भी नहीं फूलने दी। इसलिए उन्हें जल्दी से वहाँ से निकल जाना पड़ा। दूसरे पलायन में उन्हें ऐसा नहीं करना पड़ेगा।

दूसरा पलायन तीसरे कारण से भी बड़ा होने जा रहा है। वह तथ्य यह है कि जब वे पवित्र भूमि की तीर्थयात्रा करेंगे तो प्रभु जंगल को मरूद्यान में बदल देंगे। याद रखें कि पहले पलायन में वे जंगल में चले गए थे और भोजन और पानी के लिए लगातार संघर्ष करना पड़ा था।

वे 38 साल तक मन्ना खाते रहे। दूसरे पलायन में जो होने जा रहा है वह यह है कि जंगल एक मरूद्यान में बदल जाएगा। वहाँ झरने, पानी और भोजन होंगे।

लोगों को लगातार भोजन और देखभाल दी जाएगी। यह उनके द्वारा पहले अनुभव किए गए उद्धार से भी अधिक बड़ा उद्धार होगा। चौथा, दूसरा पलायन और भी बड़ा होगा क्योंकि प्रभु उन्हें वापस उस देश में ले आएंगे और उन्हें फिर कभी वहाँ से बाहर नहीं निकाला जाएगा।

वे प्रभु की आराधना और सेवा करने के लिए वापस आ सकेंगे और हमेशा वादा किए गए देश की प्रचुरता का आनंद ले सकेंगे। यही यशायाह है। दूसरा पलायन इतना बड़ा होगा कि पहला पलायन याद नहीं रहेगा।

कई मायनों में, यिर्मयाह बिल्कुल यही बातें कहने जा रहा है। लेकिन कुछ जगहों पर ध्यान दें जहाँ हम दूसरे पलायन के भाव को देखते हैं, खासकर यिर्मयाह 30-33 में। प्रभु कहते हैं, 31 आयत 2, जो लोग तलवार से बच गए, निर्वासन के बचे हुए लोगों ने जंगल में अनुग्रह पाया है।

इसलिए, जिस तरह से प्रभु ने पहले पलायन में इस्राएल के लोगों को जंगल से निकाला था, उसी तरह प्रभु उन्हें अनुग्रह प्रदान करने जा रहे हैं जब वे वादा किए गए देश की ओर वापस अपनी यात्रा कर रहे हैं। जब इस्राएल ने विश्राम की तलाश की, तो प्रभु दूर से उनके सामने प्रकट हुए और कहा, मैंने तुमसे सदा प्रेम किया है, और इसलिए, मैंने तुम्हारे प्रति अपनी वफादारी जारी रखी है। इसलिए, प्रभु उन्हें जंगल में फिर से अनुग्रह दिखाने जा रहे हैं, इसका कारण यह है कि प्रभु उनसे सदा प्रेम करते हैं।

यहाँ तक कि उन्होंने जो पाप किया है, उससे भी प्रभु ने मुँह नहीं मोड़ा है। अध्याय 31, श्लोक 8 और 9 में कहा गया है, "देखो, मैं उन्हें उत्तर देश से लाऊँगा और पृथ्वी के दूर-दूर के भागों से इकट्ठा करूँगा। उनमें अंधे और लंगड़े, गर्भवती औरत और प्रसव पीड़ा से पीड़ित, एक बड़ी भीड़, वे सब यहाँ लौट आएंगे।

तो, वही बात जो यशायाह कहता है, प्रभु उन्हें कई देशों से वापस लाएगा। और यहाँ तक कि लंगड़े, अपाहिज, गरीब और गर्भवती महिलाओं की भी, परमेश्वर सभी लोगों की देखभाल करेगा और उन्हें सुरक्षित वापस लाएगा। अध्याय 31, श्लोक 11, क्योंकि प्रभु ने याकूब को छुड़ाया है, और उसने उसे उन हाथों से छुड़ाया है जो उसके लिए बहुत शक्तिशाली हैं।

इसलिए वे धार्मिक शब्द, फिरौती और मुक्ति, जो निर्गमन की कहानी के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, को निर्वासन से लौटने पर भी लागू किया जा सकता है क्योंकि प्रभु उनके परिवार की ओर से कार्य करने जा रहे हैं और उन्हें छुड़ाएंगे और उन्हें बंधन से बाहर लाएंगे। . और वह शब्द रिडीम यह संदेश देने वाला है। अध्याय 31, श्लोक 31 से 34, जब प्रभु नई वाचा का वादा करता है, तो वह उससे भी बड़ा वादा करता है जब वह शुरू में उन्हें मिस्र देश से बाहर लाया था।

अध्याय 32 में, यिर्मयाह वास्तव में प्रभु से मुक्ति दिलाने के लिए प्रार्थना कर रहा है। उन चीजों में से एक जो यिर्मयाह को आश्वासन देती है कि प्रभु अपने वादे निभाएंगे और इस्राएल की ओर से यह महान कार्य करेंगे और उन्हें निर्वासन से वापस लाएंगे, वह यह है कि वह याद रखता है कि प्रभु ने अतीत में अपने लोगों के लिए क्या किया था। और अतीत में भगवान ने अपने लोगों के लिए जो किया है वह यह आश्वासन है कि भगवान भविष्य में लोगों से किए गए अपने वादों को निभाएंगे।

यिर्मयाह ने उस अंश में उद्धार के जिस अंतिम कार्य पर ध्यान केंद्रित किया है, वह यह याद करना है कि जब इस्राएल के लोग मिस्र में गुलाम थे, तब प्रभु ने उनके लिए क्या किया था। इसलिए, सांत्वना की पुस्तक में एक प्रमुख विषय और उद्देश्य यह है कि परमेश्वर दूसरा पलायन लाने जा रहा है। एक और बात जो मैंने देखी वह यह है कि सांत्वना की पुस्तक में एक तीसरा प्रमुख विचार यह है कि जब प्रभु इस्राएल राष्ट्र को वापस लाएगा, तो वह उन्हें फिर से एक करने जा रहा है।

अब पुराने नियम की कहानी में, उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य के बीच विभाजन कुछ सौ वर्षों तक एक दर्दनाक वास्तविकता है। और फिर अंततः 722 से 586 तक, यहूदा मूल रूप से अकेला रहने वाला है क्योंकि उत्तरी राज्य को बंदी बना लिया गया है। अब, अगर हम पीछे जाएं और उन कारणों को देखें कि वह विभाजन क्यों हुआ, तो इसके राजनीतिक और धार्मिक दोनों कारण थे।

राजनीतिक कारण यह है कि सुलैमान का बेटा रहूबियाम एक मूर्ख था और उसने एक बहुत ही मूर्खतापूर्ण राजनीतिक निर्णय लिया जिससे राजनीतिक दरार पैदा हो गई। लेकिन धार्मिक कारण यह था कि परमेश्वर सुलैमान के धर्मत्याग को दंडित कर रहा था। उसने दाऊद के राज्य को पूरी तरह से नहीं छीना, लेकिन उसने उसे बहुत कम कर दिया।

खैर, उत्तर और दक्षिण के बीच विभाजन की वह दर्दनाक वास्तविकता पूरी तरह से ठीक हो जाएगी जब प्रभु भविष्य में अपने लोगों को वापस लाएंगे। अध्याय 31, श्लोक 27 और 28 में यह कहा गया है, "देखो, ऐसे दिन आ रहे हैं, प्रभु की वाणी है, " " जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों को मनुष्य और पशु दोनों के वंश से बोऊंगा। और ऐसा होगा कि जैसे मैंने उन्हें उखाड़ने और तोड़ने, उखाड़ फेंकने और नष्ट करने के लिए उन पर नज़र रखी है।" ये क्रियाएँ यिर्मयाह के न्याय का वर्णन करती हैं।

"और उन्हें हानि पहुँचाओगे, इसलिए मैं उन्हें बनाने और उन्हें वापस रोपने के लिए निगरानी रखूँगा।" वादे इसराइल और यहूदा दोनों को दिए गए हैं। जब परमेश्वर नई वाचा बनाएगा, तो मैं इस्राएल और यहूदा दोनों के साथ एक नई वाचा बनाऊँगा। जनजातियाँ एक साथ जुड़ने जा रही हैं, और वे इसे एक एकीकृत लोगों के रूप में अनुभव करने जा रहे हैं।

जब आप इज़राइल और यिर्मयाह 30-33 के सन्दर्भ पढ़ते हैं तो जो चीजें आप नोटिस करते हैं उनमें से एक, अक्सर ऐसे नाम होते हैं जिनका उपयोग किया जा रहा है याकूब या एप्रैम या ऐसी चीजें जो आम तौर पर उत्तरी साम्राज्य से अधिक जुड़ी हुई थीं। वह विभाजन भविष्य के राज्य में मौजूद नहीं रहेगा। फिर, चौथा, और कुछ ऐसा जो उस वाचा के वादे के प्रकाश में बेहद महत्वपूर्ण है जो परमेश्वर ने इस्राएल से किया था, सात्वना की पुस्तक वादा करती है कि प्रभु इस्राएल के लिए एक नया डेविड खड़ा करने जा रहा है।

यिर्मयाह के जीवन में, दाऊद का घराना इतना भ्रष्ट हो गया था कि प्रभु उन्हें सिंहासन से हटाने जा रहा था। यिर्मयाह में वादा और यह कई भविष्यवाणियों की किताबों में सच है, कि भविष्य में एक आदर्श दाऊद शासक होने जा रहा है। अब, उनके पुराने नियम के दृष्टिकोण से, वे शायद यह नहीं समझ पाए होंगे कि वह यीशु मसीहा है, लेकिन उन्होंने राजवंश की बहाली देखी।

या फिर उन्होंने देखा कि भविष्य में एक आदर्श दाऊदवंशी शासक होगा जो वह सब कुछ होगा जो परमेश्वर ने दाऊदवंशी राजा के लिए बनाया था। जब हम नए नियम में आते हैं, तो यीशु इसकी पूर्ति है। यीशु पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की कल्पना से भी अधिक इसकी अभिव्यक्ति बन जाता है।

यीशु केवल दाऊद का पुत्र नहीं है, और वह स्वयं परमेश्वर भी है। यीशु सिर्फ आदर्श डेविडिक शासक नहीं बनने जा रहा है, वह हमेशा के लिए शासन करने वाला राजा बनने जा रहा है। वह सिर्फ यरूशलेम में सिंहासन से शासन नहीं करेगा, वह वस्तुतः परमपिता परमेश्वर के दाहिने हाथ से शासन करेगा।

लेकिन यिर्मयाह की किताब और पूरे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में एक वादा है कि परमेश्वर दाऊद के वंश को पुनर्स्थापित करने जा रहा है। हम इसे सात्वना की पुस्तक में वास्तव में तीन विशिष्ट स्थानों पर देखते हैं। अध्याय 30, पद 8 और 9, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, उस दिन ऐसा होगा, कि मैं उसका जूआ गर्दन से तोड़ डालूँगा, और बन्धन तोड़ डालूँगा, और परदेशी फिर उसका दास न हो सकेंगे।

तो, यहाँ उस बात का उलट है जिसके बारे में यिर्मयाह ने बात की थी जब वह यरूशलेम के चारों ओर जूआ पहन रहा था और कहा था, तुम नबूकदनेस्सर के अधीन और बंधन में रहने वाले हो। अब झूठे भविष्यवक्ता हनन्याह ने जूए को तोड़कर उस संदेश का प्रतिकार करने की कोशिश की थी और वास्तव में वह लोगों को शांति का एक खोखला संदेश दे रहा था। लेकिन वास्तविक आशा यह है कि एक दिन, परमेश्वर के समय में, बेबीलोन की दासता का जूआ टूट जाएगा, और दासता के उस जूए के नीचे रहने के बजाय, विदेशी अब इस्राएल का सेवक नहीं बनेंगे।

परन्तु आयत 9 कहती है, परन्तु वे अपने परमेश्वर यहोवा की, और अपने राजा दाऊद की, जिसे मैं उनके लिये खड़ा करूंगा, उपासना करेंगे। अंततः, हम जानते हैं कि उसकी पूर्ति यीशु द्वारा की गई है—अध्याय 30, पद 21, इस्राएल के भावी शासक के बारे में एक प्रतिज्ञा।

और उस अनुच्छेद में कहा गया है कि राजकुमार उन्हीं में से एक होगा। उनके शासक को उनके बीच से बाहर आना चाहिए। मैं उसे अपने निकट लाऊंगा और वह मेरे पास आएगा।

क्योंकि कौन स्वयं मेरे पास आने का साहस करेगा, प्रभु की यही वाणी है। इसलिए, यहां डेविड से कोई विशेष संबंध नहीं है, लेकिन वह एक इज़राइली होने जा रहा है। और उसे परमेश्वर की उपस्थिति में रहने की अनुमति पाने का सौभाग्य मिलने वाला है।

वह अंततः यीशु में मसीहा के रूप में पूरा हुआ। फिर अध्याय 33 श्लोक 15 और 16, उस वादे को दोहराते हैं जो हमें पहली बार यिर्मयाह में, अध्याय 23 में दिया गया है। और यहां भविष्य के डेविडिक शासक का वर्णन है।

उन दिनों और उस समय में, मैं दाऊद के लिए एक धर्मी शाखा को उगाऊंगा, और वह देश में न्याय और धार्मिकता को कार्यान्वित करेगा। दाऊद वंश में अंतिम राजा के रूप में सिदकियाह, उसका नाम था यहोवा मेरी धार्मिकता है। वह अपने नाम के अनुरूप नहीं जीया, लेकिन भविष्य में एक सिदक समाच, एक धर्मी शाखा होने जा रही है जो उस नाम के अनुरूप जीएगी और जो वह सब कुछ होगी जो परमेश्वर ने दाऊद के घराने के लिए डिज़ाइन किया था।

फिर से, मसीहा के रूप में यीशु ही वह है जो इसे पूरा करने जा रहा है। ठीक है। तो ये कुछ बुनियादी वादे हैं जो इसके साथ जुड़े हैं।

उन्हें भूमि पर वापस लाओ, उनके शहरों का पुनर्निर्माण करो, दूसरा पलायन, उत्तर और दक्षिण का पुनर्मिलन, एक नई वाचा जहां भगवान इसराइल को बदल देंगे ताकि वे उसकी आज्ञा मानें, और एक नया डेविड। नई वाचा के इस वादे में जो अध्याय 31 श्लोक 31 और 34 में दिया गया है, याद रखें कि यह वहां क्या कहता है, भगवान अपने लोगों के दिलों पर कानून लिखने जा रहे हैं। उनमें उसकी आज्ञा मानने की आंतरिक इच्छा होगी।

तो, जो होने जा रहा है वह यह है कि यह उस चक्र और अवज्ञा के इतिहास को तोड़ने जा रहा है जिसे हम पुराने नियम में सैकड़ों-हजारों वर्षों से देखते आ रहे हैं। पुराने नियम के इतिहास के समय में इस्राएल के देश में रहने के दौरान चीजें कैसी रहीं? प्रभु के प्रति वफ़ादार और उनकी आज्ञाओं के प्रति वफ़ादार होने के मामले में चीजें कैसी रहीं? बहुत खराब। लेकिन प्रभु जो करने जा रहा है वह यह है कि वह अपने लोगों के दिलों को बदलने जा रहा है, वह उन्हें एक नया दिल देने जा रहा है ताकि वे उसकी आज्ञा मानें, और यहाँ संभावना है, यहाँ बताया गया है कि इसके परिणामस्वरूप क्या होने जा रहा है।

यिर्मयाह अध्याय 32, श्लोक 39 और 40. वे मेरे लोग होंगे, मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, मैं उन्हें एक हृदय और एक मार्ग दूंगा कि वे सदा मेरा भय मानें। पुस्तक में पहले यहोयाकीम के साथ एक

समस्या यह थी कि जब परमेश्वर ने पुस्तक के माध्यम से चेतावनियाँ दीं, तो उसने उनकी बात नहीं सुनी, वह प्रभु का भय नहीं मानता था।

और उसने बस उस पुस्तक को काटा और कहा, मुझे परवाह नहीं कि परमेश्वर क्या कहता है। भविष्य में लोगों और उनके नेताओं में परमेश्वर का भय होगा जो उन्हें आज्ञा मानने में सक्षम बनाएगा। ताकि वे अपने और अपने बाद अपने बच्चों के भले के लिए हमेशा मेरा भय मानें, मैं उनके लिए एक चिरस्थायी वाचा बाँधूँगा और मैं उनके साथ भलाई करने से पीछे नहीं हटूँगा क्योंकि मैंने उनके दिलों में अपना भय डाला है। इसलिए, वे हमेशा के लिए परमेश्वर के आशीर्वाद का आनंद लेंगे।

वहाँ कभी भी निर्वासन नहीं होगा क्योंकि निर्वासन की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि वे स्थायी रूप से परमेश्वर के प्रति वफ़ादार, विश्वासयोग्य और आज्ञाकारी होंगे। तो ये हैं, ये पुनर्स्थापना की पुस्तक के अध्याय 30 से 33 के मूल वादे। इस पर हमारी प्रतिक्रिया और हमारी प्रतिक्रिया है, वाह, यह बहुत बढ़िया है।

हम वहाँ कब पहुंचेंगे? और आप कल्पना कर सकते हैं, जैसे हम यिर्मयाह 40 से 43 की ओर मुड़ते हैं, अध्याय 39 में शहर के पतन को याद करते हुए; हमें मोक्ष के आशीर्वाद का अनुभव होने में कितना समय लगेगा? याद रखें, यिर्मयाह ने कहा था कि निर्वासन 70 वर्षों तक चलेगा। तो, जो हम अध्याय 40 से 43 में देखते हैं, और कभी-कभी सांत्वना की पुस्तक के साथ कुछ स्पष्ट विरोधाभास में, ऐसा लगता है कि एक संभावित बहाली शुरू हो गई है, लेकिन निराशाजनक बात यह है कि वास्तव में गिरावट है यरूशलेम के न्याय का अंत नहीं है। आप सोचेंगे, ठीक है, शायद लोगों ने अंततः अपना सबक सीख लिया है।

शहर गिर गया है। उनमें से कई को हटा लिया गया है। देश में केवल गरीब ही बचे हैं।

खैर, इससे उनका ध्यान आकर्षित हुआ और वे परमेश्वर की ओर लौट आए। लेकिन हम जो देखते हैं वह यह है कि न्याय और अवज्ञा की स्थितियाँ वास्तव में जारी रहने वाली हैं। और अध्याय 30 से 33 में जिन आशीर्षों का वादा किया गया है और अध्याय 40 से 43 में जो वास्तविकता जी जा रही है, उनके बीच बहुत बड़ा अंतर है।

उस मुख्य वादे को याद रखें: प्रभु जब एक नई वाचा स्थापित करेंगे तो वे इस्राएल को बदल देंगे ताकि वे हमेशा उनकी आज्ञा मान सकें और उनका अनुसरण कर सकें, और वे कभी पीछे नहीं हटेंगे; उन्हें अपने पाप के लिए फिर कभी दंडित नहीं होना पड़ेगा। ऐसा लगता है कि जैसे ही हम यिर्मयाह 40 में प्रवेश करते हैं, गदल्याह को राज्यपाल नियुक्त किया जाता है। सिंहासन पर कोई राजा नहीं है, लेकिन शापान के परिवार से गदल्याह, जो अपने पूरे मंत्रालय के दौरान यिर्मयाह का समर्थक रहा है, यहूदा का राज्यपाल बन जाता है।

और ऐसा लगता है कि हमें एक तरह का मामूली रिटर्न नजर आने लगा है। और हम लगभग आश्चर्यचकित हो जाते हैं, ठीक है, वाह, यह आरंभिक रूप जैसा दिखता है, कम से कम यिर्मयाह अध्याय 30 से 33 तक। सुनिए यह यिर्मयाह 40 श्लोक आठ में क्या कहता है, गदल्याह, अहीकाम

का पुत्र, शापान का पुत्र, ने शपथ खाई उन्होंने और उनके जनों से कहा, कसदियों की अधीनता करने से मत डरो, देश में ही रहो, बाबुल के राजा की अधीनता करो, तो तुम्हारा भला होगा।

ठीक है, यही बात यिर्मयाह को भी सिखाई गई है। और यहाँ अध्याय 40 और 41 में यिर्मयाह गायब हो जाता है, और गदल्याह उसकी जगह लेता है और कहता है, देखो, यदि तुम बेबीलोनियों की सेवा करोगे, तो चीजें तुम्हारे लिए अच्छी होंगी, हम समृद्ध होंगे, हम सफल होंगे। और पद 10 में वह कहता है, जहां तक मेरी बात है, मैं उन कसदियों के साम्हने जो हमारे पास आएंगे, तुम्हारा प्रतिनिधित्व करने के लिये मिट्जपा में निवास करूंगा।

परन्तु तुम लोग दाखमधु, धूपकाल के फल और तेल इकट्ठा करके अपने बर्तनों में रख लेना, और अपने अपने नगरों में जो तुम ने ले लिये हो, बस जाना। इसलिए, आरंभिक तरीके से, 30 से 33 में पुनर्स्थापना की प्रचुरता, आशीर्वाद, समृद्धि, गदालिया चाहता है कि वे इसका आनंद लें और अनुभव करें कि भले ही यह केवल छोटी अवधि में है, इसके तुरंत बाद कम समय में यरूशलेम का पतन हो चुका है। तो, क्या यह 30 से 33 में पुनर्स्थापना की शुरुआत है? मुझे लगता है कि कथावाचक हमें इसी ओर ले जा रहा है।

लेकिन वास्तविकता यह है कि अध्याय 40 से 43 तक का यह भाग, लोगों के दिलों पर लिखे परमेश्वर के कानून की विशेषता होने के बजाय, परमेश्वर के प्रति अवज्ञा के दो विशिष्ट कार्य होने जा रहे हैं। और इसलिए, जिस तरह से लोग यरूशलेम के पतन से पहले परमेश्वर की अवज्ञा कर रहे थे, उसी तरह वे परमेश्वर के वचन और विशेष रूप से यिर्मयाह के भविष्यसूचक वचन के प्रति भी अवज्ञाकारी हैं। इसलिए, यह पुनर्स्थापना नहीं हो सकती।

निश्चित रूप से, इस समय, परमेश्वर का कानून लोगों के दिलों पर नहीं लिखा गया है क्योंकि वे अभी भी वही काम कर रहे हैं जो पहले स्थान पर न्याय लाए थे। अवज्ञा का पहला कार्य यह है कि गदल्याह, राज्यपाल को नबूकदनेस्सर द्वारा नियुक्त किया गया है, और परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को अधिकार दिया है, इसलिए परमेश्वर ही वह है जिसने गदल्याह को नियुक्त किया, गदल्याह की हत्या कर दी गई। अध्याय 40, श्लोक 9 में, उस खंड में यिर्मयाह के प्रतिस्थापन के रूप में, गदल्याह कहता है, बेबीलोन के अधीन हो जाओ।

और अगर तुम खुद को बेबीलोन के आधिपत्य के अधीन रखोगे, यह पहचानोगे कि परमेश्वर ने इस समय बेबीलोनियों को अधिकार दिया है, तो तुम्हारे लिए सब कुछ ठीक रहेगा। तो हम वही बात सुनते हैं, गेदल्याह मूल रूप से वही बात कह रहा है जो याद करो यिर्मयाह यरूशलेम के पतन से ठीक पहले के दिनों में सिदकिय्याह से कह रहा था। बेबीलोन के अधीन हो जाओ, खुद को उनके जुए के अधीन कर लो; अगर तुम आत्मसमर्पण करोगे और बेबीलोन के अधीन हो जाओगे, यह पहचानोगे कि वे वही अधिकारी हैं जिन्हें परमेश्वर ने यहाँ स्थापित किया है, तो तुम्हारे लिए सब कुछ ठीक रहेगा, और तुम्हारा जीवन बच जाएगा।

सिदकिय्याह ने परमेश्वर के वचन को नहीं सुना और उसके परिणामस्वरूप उसे न्याय का सामना करना पड़ा। गेदल्याह कहता है, बेबीलोन के अधीन हो जाओ, तुम्हारे लिए सब कुछ अच्छा होगा, और ऐसा लगता है कि शुरुआत में, यही अनुभव होने वाला है। वह उन्हें फल काटने, फसल लाने

के लिए कहता है, प्रभु हमें आशीर्वाद देते हैं, और हम शरणार्थियों और निर्वासितों को देश में लौटते हुए भी देखना शुरू करते हैं।

पद 11, इसी प्रकार जब मोआब में, अम्मोनियों में, एदोम में और अन्य देशों में रहने वाले सब यहूदियों ने सुना, कि बाबुल के राजा ने यहूदा में कुछ बचे हुए लोगों को छोड़ दिया है, और अहीकाम के पुत्र गदल्याह को उन पर अधिपति नियुक्त किया है, तब वे उन स्थानों से लौट आये। तो, अध्याय 30 से 33, अध्याय 30 से 33 में क्या वादा किया गया था कि प्रभु उन्हें भूमि पर वापस लाने जा रहे थे? यह सब चल रहा है और वाह, क्या यह शुरुआत है? लेकिन यह सब अध्याय 41 में बदल जाता है जब गदल्याह की इश्माएल नाम के एक व्यक्ति द्वारा हत्या कर दी जाती है। और विडंबना यह है कि इश्माएल दाऊद के घराने से है।

और इसलिए, यह आरंभिक आशीर्वाद कि यदि आप बाबुल के प्रति समर्पण करेंगे और आज्ञापालन करेंगे, तो चीजें अच्छी तरह से चलेंगी। यह ईश्वर की हत्या का सीधा-सीधा अवज्ञा कार्य है। परमेश्वर का कानून नहीं लिखा गया है, वे अभी भी परमेश्वर और परमेश्वर की योजना और परमेश्वर की योजना के विरुद्ध विद्रोही हैं। अवज्ञा का दूसरा कार्य यह है कि अध्याय 42 से 43 में, हमारे पास जोहानान नाम के एक व्यक्ति के नेतृत्व में एक सैन्य दल की कहानी है जो यिर्मयाह के पास आ रहा है, और वे भविष्यवक्ता से पूछ रहे हैं कि इस हत्या के बाद उन्हें क्या करना चाहिए।

मेरा मतलब है, जब बेबीलोनवासी इस तथ्य पर प्रतिक्रिया करते हैं कि इस विद्रोही समूह ने उनके द्वारा नियुक्त राज्यपाल को मार डाला है, तो वे वापस आएं और भूमि पर और अधिक कहर बरपाएं। वे पता लगाने जा रहे हैं, आप जानते हैं, यरूशलेम शहर को नष्ट करने से पहले हम यहूदा पर अब और अधिक भरोसा नहीं कर सकते थे। हमें अभी भी उनसे समस्याएँ हैं और इसलिए हमें इससे निपटना होगा।

और इसलिए उनकी योजना, जोहानान और उसके समूह की योजना यह है कि वे मिस्र भाग जाएंगे। और ज़मीन, वादा की गई ज़मीन छोड़कर, उन्हें लगता है कि इससे उन्हें सुरक्षा मिलेगी। वे गदालिया की हत्या के लिए बेबीलोन के प्रतिशोध से भागने में सक्षम होने जा रहे हैं।

तो, वे यिर्मयाह के पास आते हैं, और अध्याय 42 में, कुछ दिलचस्प बातें, वे कहते हैं, हमारे लिए प्रार्थना करें और हमें बताएं कि हम क्या करते हैं, और जो कुछ प्रभु हमसे कहते हैं कि हमें करना चाहिए, हम वह करेंगे। हम इसके प्रति आज्ञाकारी रहेंगे। तो वे प्रभु का अनुसरण करने की इच्छा व्यक्त करते हैं, और फिर, ऐसा लगता है, वाह, क्या यह 30 से 33 की शुरुआत है, शायद? क्योंकि उनमें परमेश्वर का अनुसरण करने और उसकी आज्ञा मानने की इच्छा है।

यिर्मयाह कहता है मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगा। इस तथ्य के प्रकाश में विडंबना यह है कि पैगंबर अब ईश्वर के इस आदेश के अधीन नहीं हैं जहां उन्हें लोगों के लिए प्रार्थना करने की अनुमति नहीं है। वह उनके लिए हस्तक्षेप करने के लिए सहमत है।

आप जानते हैं, वे यहां आशीर्वाद का अनुभव कर सकते हैं। और वह कहता है, मैं प्रभु का एक वचन तुम्हारे पास लेकर फिर आऊंगा। भगवान आपसे क्या करवाना चाहता है? हालांकि, जब यिर्मयाह उनके पास वापस आता है, तो वह कहता है, यहाँ वही है जो प्रभु ने मुझसे कहा था।

भूमि में रहो. देखो, मिस्र जाने की चिन्ता मत करो। आप भगवान पर भरोसा करने और भगवान आपसे जो करने के लिए कहते हैं उसे करने की तुलना में वहां अधिक सुरक्षित नहीं होंगे।

बेबीलोन को सौंप दो. चीजें आपके लिए अच्छी रहेंगी. और यदि आपको याद हो कि वहां क्या होता है, तो जोहानन और उसकी पार्टी ने वह करने से इंकार कर दिया जो यिर्मयाह ने शुरू में कहा था, हम वही करेंगे जो प्रभु कहेंगे।

और फिर, जैसे ही प्रभु उन्हें भविष्यद्वक्ता के माध्यम से संदेश देता है, वे अवज्ञा करते हैं और दूर हो जाते हैं। और वास्तव में, वे उसी तरह प्रतिक्रिया करते हैं जैसे लोगों ने यरूशलेम के पतन से पहले किया था। यिर्मयाह, तुम हमसे झूठ बोल रहे हो।

आप हमें बेबीलोन के अधीन रहने के लिए कह रहे हैं क्योंकि आप और बारूक देशद्रोही हैं, और आप हमें बेबीलोनियों के हाथों बेचने की कोशिश कर रहे हैं। और अध्याय 43, श्लोक एक से सात में हमें बताया गया है कि वे प्रभु के वचन की अवज्ञा करके मिस्र में घुस गए, और वे यिर्मयाह और बारूक को अपने साथ ले गए। इसलिए, हमारे पास 30 और 33 और 40 और 43 के बीच एक स्पष्ट अंतर है।

30 से 33 में परमेश्वर कहता है, मैं अपने लोगों के दिलों में व्यवस्था लिखूंगा। वे मेरी आज्ञा मानेंगे। वे मेरा अनुसरण करेंगे।

वे हमेशा वही करेंगे जो मैं उन्हें करने के लिए कहता हूँ। अध्याय 40 से 43 में, हम वहाँ जो कुछ होता हुआ देखते हैं, उसमें परमेश्वर के विरुद्ध अवज्ञा के दो विशिष्ट कार्य हैं। और भले ही परमेश्वर उन्हें आशीर्वाद देने के लिए तैयार था और भले ही परमेश्वर ने उनके लिए आशीर्वाद पाने का मार्ग तैयार किया था, वे उस आशीर्वाद को खोने जा रहे हैं क्योंकि वही अवज्ञा जो यरूशलेम के पतन से पहले लोगों की विशेषता थी, वही अवज्ञा 586 के बाद के लोगों के लिए भी सच है।

अवज्ञा के दो विशिष्ट कार्य, अध्याय 41 में गेदल्याह की हत्या, और अध्याय 43 में यहूदियों का मिस्र भाग जाना। इसलिए, हम अभी भी उसी निराशाजनक स्थिति में हैं जिसे हमने 586 के न्याय के होने से पहले देखा था। अब, दूसरी बात जो 30 से 33 और 40 से 43 के बीच एक बहुत ही स्पष्ट अंतर प्रदान करती है, वह यह है कि, याद रखें, उद्धार का वर्णन करने वाले उद्देश्यों में से एक यह है कि परमेश्वर एक नया पलायन करने जा रहा है, और परमेश्वर एक दूसरा पलायन और एक उद्धार लाने जा रहा है जहाँ वह लोगों को कैद से बाहर निकालता है जो पहले वाले से भी बड़ा होने वाला है।

मूल रूप से, अध्याय 40 से 43 में, हालांकि, हम पलायन की प्रक्रिया को उलटते हुए देखते हैं क्योंकि इसके बजाय, अध्याय 40 में गेदल्याह के शासन के तहत या गेदल्याह के शासन के तहत लोग वापस भूमि पर आना शुरू करते हैं। लेकिन अध्याय 43, 1 से 7 में, योहानान और उसका

दल क्या करता है? वे मिस्र वापस चले जाते हैं। जैसा कि हम देख सकते हैं, यिर्मयाह ने भूमि के बाहर मिस्र में अपनी सेवकाई समाप्त की।

दूसरे मूसा के रूप में, यिर्मयाह, कुछ अर्थों में, पलायन के उलटफेर से गुजरता है। व्यवस्थाविवरण 28 पद 68 में कहा गया है कि अगर परमेश्वर अपने लोगों की अवज्ञा करता है तो उन पर एक वाचा शाप यह होगा कि वह उन्हें जहाज़ों पर बिठाएगा और उन्हें मिस्र वापस भेज देगा। वस्तुतः, यिर्मयाह के जीवन में, वह जहाज़ पर नहीं चढ़ता है, लेकिन उसे मिस्र वापस भेज दिया जाता है।

हमारे पास मुक्ति का इतिहास उलट है। यिर्मयाह 26 से 45 के संदर्भ में, सांत्वना की पुस्तक में जो वादा किया गया है उसके बिल्कुल विपरीत स्थिति हमारे सामने है। अध्याय 30 से 33 हमें एक नए पलायन का वादा देते हैं।

अध्याय 40 से 43 हमारे लिए पलायन न होने की वास्तविकता को दर्शाते हैं। तो, यहाँ एक बहुत स्पष्ट विरोधाभास है। और फिर, अंततः, जिस चीज़ को मैं थोड़ा और विस्तार से विकसित करना चाहता हूँ वह यह है कि सांत्वना की पुस्तक में कहा गया है कि ईश्वर इज़राइल के लिए एक नया डेविड खड़ा करने जा रहा है।

और लोग अपने राजा दाऊद की सेवा करने जा रहे हैं। वे अब विदेशी उत्पीड़कों की सेवा नहीं करेंगे। प्रभु एक धर्मी शाखा बढ़ाने जा रहा है।

इसलिए, परमेश्वर ने इस्राएल के घराने से जो वाचा के वादे किए हैं, वे पूरे होने जा रहे हैं। परमेश्वर दाऊद के साथ अपनी वाचा को पूरा करने जा रहा है, और प्रभु एक नए दाऊद को खड़ा करने जा रहा है। लेकिन मैं हमें अध्याय 40 से 43 में दाऊद के घराने के प्रतिनिधि की याद दिलाना चाहता हूँ।

उसका नाम इश्माएल है। इश्माएल शाही परिवार का एक सदस्य है जो अंततः गदल्याह की हत्या करता है और वास्तव में अधिक न्याय लाता है। इसलिए, अध्याय 30 से 33 में, हम एक नए दाऊद की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो एक धर्मी शाखा बनने जा रहा है और लोगों को सही दिशा में ले जाएगा।

अध्याय 40 से 43 में, निर्वासन के तुरंत बाद हमारे पास एक और दाऊदी है जो उन लोगों की तरह है जिनके खिलाफ परमेश्वर ने न्याय किया था। एप्पलगेट नाम के एक विद्वान का कहना है कि जब इश्माएल ने गदल्याह की हत्या की तो उसके कार्यों ने बेबीलोन के वर्चस्व और यहूदिया की पुनर्स्थापना दोनों में यहोवा के उद्देश्यों के प्रति दाऊद के घराने के शत्रुतापूर्ण विरोध की तस्वीर को पूरा किया। इसलिए दाऊद के घराने द्वारा पुनर्स्थापना को सुगम बनाने और दाऊद के घराने द्वारा लोगों को आशीर्वाद देने के बजाय, दाऊद का घराना अधिक न्याय, अधिक बंधन, अधिक हिंसा और अधिक आपदा लाने जा रहा है।

हम निश्चित रूप से ऐसी स्थिति में नहीं हैं जहाँ प्रभु एक धार्मिक शाखा को खड़ा करने जा रहे हैं। निर्वासन के तुरंत बाद, दाऊद के घराने का मुख्य प्रतिनिधि यहूदा के अंतिम राजाओं की तरह ही भ्रष्ट है, जिनके बारे में हम यिर्मयाह 22 में पढ़ते हैं। यहोयाकीम जैसे लोग जिन्होंने प्रभु की बात

नहीं मानी, सिदकिय्याह जैसे लोग जिन्होंने बेबीलोन के अधीन होने के आदेश पर ध्यान नहीं दिया।

और मेरा मानना है कि इश्माएल ने गदल्याह की हत्या करवाने के लिए ऐसा किया। यह परमेश्वर द्वारा अंततः जो कुछ किया जाना था उसे पुनः स्थापित करने का उसका असफल प्रयास है। वह दाऊद के घराने को फिर से सत्ता में लाना चाहता है।

यह तभी घटित होगा जब यह ईश्वरीय तरीके से किया जाएगा। अब चूँकि मैंने पुराने नियम का अध्ययन कर लिया है, मैं कहानियों की सुंदरता, कलात्मकता और परिष्कार की गहराई से सराहना करने लगा हूँ। और उन चीजों में से एक जो मुझे अध्याय 40 से 43 तक प्रभावित करती है, कुछ मायनों में यह पुराने नियम के इतिहास में एक आकस्मिक फुटनोट की तरह है।

बहुत से लोग जो बाइबल को वास्तव में अच्छी तरह से जानते हैं या कई वर्षों से पुराने नियम को पढ़ते हैं, जरूरी नहीं कि वे इश्माएल और गदल्याह के बारे में जानते हों। लेकिन वर्णनकर्ता जो करता है वह यह है कि कई दिलचस्प तरीकों से, वर्णनकर्ता शाऊल और डेविड की प्रसिद्ध कहानी के प्रकाश में इश्माएल और गदल्याह की कहानी को चित्रित करने जा रहा है। याद रखें कि शाऊल और दाऊद के साथ क्या हुआ था।

शाऊल परमेश्वर का अभिषिक्त शासक है जिसका स्थान दाऊद ने ले लिया है। और फिर दाऊद के घराने को ये प्रतिज्ञाएँ दी गईं कि वे सर्वदा शासन करेंगे। हमारे वंश में शाऊल से दाऊद का परिवर्तन हुआ है।

खैर, याद रखें कि यिर्मयाह के मंत्रालय में जो हुआ वह यह है कि हमारे प्रशासन में बदलाव हुआ है। दाऊद का घराना परमेश्वर का उप-शासनकर्ता रहा है। वे भगवान के सेवक रहे हैं जिन्होंने पृथ्वी पर भगवान के शासन को क्रियान्वित किया।

यिर्मयाह के मंत्रालय में, सर्वोच्चता की भूमिका, आधिपत्य की भूमिका, शासकत्व की भूमिका और ईश्वर का प्रतिनिधि होने की भूमिका नबूकदनेस्सर को दी गई है। नबूकदनेस्सर अब परमेश्वर का सेवक और परमेश्वर का अभिषिक्त शासक है। जब हम अध्याय 40, श्लोक 5, श्लोक 7, श्लोक 11, अध्याय 41, श्लोक 2 और 41.10 में पढ़ते हैं, कि गदल्याह को राज्यपाल के रूप में नबूकदनेस्सर द्वारा नियुक्त किया गया था, गदल्याह परमेश्वर का नियुक्त शासक है।

प्रशासन में उसी तरह परिवर्तन हुआ है जैसे शाऊल और दाऊद के दिनों में हुआ था। यह स्वाभाविक है कि वर्णनकर्ता उस कहानी पर वापस जाएगा और यिर्मयाह के दिनों में हो रहे बदलाव को प्रस्तुत करेगा। हालाँकि, यहाँ दिलचस्प बात यह है कि इस कहानी में गदालिया ही नया डेविड बन गया है।

और विडंबना यह है कि यह इश्माएल ही है, जो डेविड के घराने के सदस्य के रूप में कई तरह से कार्य करता है जो हमें शाऊल की याद दिलाता है। ठीक है, तो आइए कुछ समानताओं के बारे में सोचें। अध्याय 40 और 41, विशेष रूप से, हमें दाऊद और शाऊल की कहानी की कैसे याद दिलाते हैं? ठीक है, याद रखें कि जब गदल्याह राज्यपाल बनता है, तो यह हमें बताता है कि

यहूदी और इस्राएली जो मोआब, अम्मोन और एदोम जैसे स्थानों में शरणार्थी रहे हैं, वे भूमि पर वापस आना शुरू कर देते हैं।

ये वे स्थान हैं जहाँ जब दाऊद राजा बनता है, तो वह अपना अधिकार स्थापित करना शुरू करता है और उन्हें अपने अधीन करना शुरू करता है और अपना राज्य स्थापित करता है। अध्याय 40, श्लोक 7 में हमें बताया गया है कि गदल्याह, जो यह नया दाऊद है, मित्रपा में अभिषिक्त होता है। बहुत दिलचस्प है।

यह वही जगह है जहाँ 1 शमूएल अध्याय 10 में शाऊल को पहली बार राजा के रूप में अभिषिक्त किया गया था। अब, इश्माएल, जब वह इस साजिश को अंजाम दे रहा है और गदल्याह को मौत के घाट उतारने की साजिश कर रहा है, तो ऐसा लगता है कि वह किसी तरह से बेलस द्वारा समर्थन की पेशकश से प्रेरित है, जो अम्मोनियों का राजा है। और आखिरकार, जब इश्माएल को यहूदा से भागना पड़ा, तो वह अम्मोनियों के पास जाने वाला था।

खैर, 2 शमूएल अध्याय 10, आयत 1 से 3 हमें याद दिलाती है कि अपने राज्य के शुरुआती दिनों में, दाऊद के अम्मोनियों के साथ घनिष्ठ संबंध थे। ठीक है। तो, वहाँ स्थानों और नामों और भूगोल के द्वारा, हम पहले से ही शाऊल और दाऊद की कहानी की कुछ प्रतिध्वनियाँ सुन रहे हैं।

ठीक है। अब, मुझे लगता है कि वास्तव में कुछ अन्य चीजें हैं जो इसे थोड़ा और आगे ले गईं। मैं बस कुछ का उल्लेख करना चाहता हूँ।

गदल्याह को मृत्युदंड दिए जाने से पहले यह समाचार मिलता है कि इश्माएल की ओर से कोई षड्यंत्र रचा जा रहा है और इश्माएल उसकी जान ले लेता है। गदल्याह उस पर अमल करने से इंकार कर देता है। किसी तरह, मुझे यह तथ्य याद आता है कि दाऊद, जो शाऊल के साथ इस बड़े संघर्ष में शामिल है और शाऊल से भागना और भागना याद करता है, के पास शाऊल की जान लेने के अवसर हैं, लेकिन वह ऐसा करने से इंकार कर देता है।

किसी तरह से, गदल्याह इश्माएल के खिलाफ़ कार्रवाई करने से इनकार करता है। लेकिन इस विशेष कहानी में, यह दाऊद का वंशज इश्माएल है, जिसे अपना हाथ बढ़ाने और प्रभु के अभिषिक्त पर हिंसा करने में कोई समस्या नहीं है। दाऊद, एक सम्माननीय व्यक्ति के रूप में, प्रभु के अभिषिक्त को छूना नहीं चाहेगा।

जब भी उसे मौका मिलता तो वह शाऊल को छूता नहीं था। इश्माएल दाऊद जैसा कुछ नहीं है क्योंकि प्रभु ने गदल्याह को नियुक्त किया है, और इश्माएल उसे मौत के घाट उतार देता है। अब, इश्माएल, गदल्याह की हत्या करने के बाद भी अपनी हिंसा से नहीं रुका है।

अध्याय 41, श्लोक चार से नौ में हमें बताया गया है कि उसने उत्तर से आए 70 तीर्थयात्रियों की भी हत्या कर दी, जो जाहिर तौर पर भगवान की पूजा करने और गेदल्याह को समर्थन देने के लिए आए थे। वह वास्तव में उन्हें धोखा देता है, उन्हें धोखा देता है, और उनसे कहता है कि वह उन्हें गेदल्याह के पास ले जाएगा। और गेदल्याह के साथ जो कुछ हुआ है, उसके मद्देनजर, यह विडंबना है कि वह ऐसा कहता है।

वह उनकी हत्या कर देता है और उनके शव कुएं में फेंक देता है। और ऐसा लगता है कि ऐसा करने का एकमात्र कारण यह है कि उनका मानना है कि वे गदालिया के समर्थक हैं। प्रभु की आराधना करने आए लोगों की जघन्य, हिंसक हत्या किसी तरह से हमें इस तथ्य की याद दिला सकती है कि डेविड के साथ अपने संघर्ष में शाऊल ने 85 पुजारियों की हत्या कर दी थी जिनके बारे में उसका मानना था कि वे उसके खिलाफ साजिश रच रहे थे।

अंत में, इश्माएल, आखिरी चीज जो हम उसके बारे में देखना शुरू करते हैं वह यह है कि इश्माएल इस जघन्य अपराध को करने के बाद दूर जाने और भागने की कोशिश करने के लिए कार्रवाई करने जा रहा है। यह हमें अध्याय 41 श्लोक 10 में बताता है, कि वह बंधकों और बंधुओं को लेता है। इसमें राजा की बेटियाँ भी शामिल हैं और वह भागकर अम्मोन के पास भागने वाला है।

1 शमूएल में शाऊल की मृत्यु से पहले हमने जो अंतिम घटनाएँ पढ़ीं उनमें से एक यह है कि डेविड ने परिवार के सदस्यों का अपहरण कर लिया है, और डेविड और उसके लोगों को जाकर उन्हें छुड़ाना है। लेकिन अब यह डेविड के घर का एक सदस्य है जिसने अपहरण किया है और पत्नी और परिवार के सदस्यों को अन्य लोगों से छीन लिया है, और यह जोहानान और सैन्य अधिकारियों को जाना है और डेविड के घर के इस सदस्य को पकड़ना है जो लगभग है अपने लोगों को निर्वासन में ले जाने के लिए। इश्माएल, एक दाऊदवादी के रूप में, पुनर्स्थापना नहीं ला रहा है।

वास्तव में, वह लोगों को निर्वासन में ले जा रहा है। वह दाऊद से अधिक नबूकदनेस्सर जैसा दिखता है। अतः ये सब बातें हमें दिखा रही हैं कि दाऊद का घराना अब भी बड़े संकट में है।

40-43 के बाद के समय में दाऊद की वंशावली में एकमात्र प्रतिनिधि वह धार्मिक शाखा नहीं है जिसका वादा परमेश्वर ने भविष्य के लिए किया था। यह सिर्फ एक आदमी है जो बुरी खबर है। वह स्थान जहाँ योहानान और सैन्य अधिकारी इश्माएल के अपहृत पीड़ितों को बचाने जा रहे हैं, वह गिबोन का तालाब है।

फिर से, 2 शमूएल अध्याय 2 में दाऊद और शाऊल की कहानी पर वापस जाते हुए, यह वह स्थान है जहाँ अब्नेर और योआब ने दाऊद के लोगों के परिवार के 12 प्रतिनिधियों और शाऊल के लोगों के 12 प्रतिनिधियों को रखने का फैसला किया। वे लड़ते हैं। वे सभी मारे जाते हैं, और फिर अंततः, दाऊद के लोग शाऊल को हरा देते हैं, और शाऊल और उसके लोगों को देश से भागना पड़ता है।

लेकिन अब, इस परिच्छेद में, गिबोन के तालाब में हार के बाद, यह दाऊद के घराने का एक सदस्य है... तो, हम देखते हैं कि दाऊद का घर, कि यहूदा के लोग अभी भी सजा के अधीन हैं न्याय का, और पुनर्स्थापना का वादा जो भगवान ने अपने लोगों को दिया है, निकट भविष्य में अनुभव नहीं किया जाएगा। पाप और लोगों द्वारा प्रभु का वचन न सुनने का जो पैटर्न हमने यिर्मयाह के पूरे मंत्रालय में देखा है, वह यरूशलेम के पतन के बाद भी जारी रहेगा। लोगों ने वास्तव में अपना सबक नहीं सीखा है।

यह सब निर्वासन में रहने वाले लोगों के लिए एक बड़ा सबक बन जाता है क्योंकि बेबीलोन के निर्वासन में लोगों को वादा दिया गया है कि, अंततः, वे अच्छे अंजीर हैं जिन्हें प्रभु पुनर्स्थापित करेंगे और भूमि पर वापस लाएंगे। लेकिन यह उन्हें याद दिला रहा है कि कोई वादा स्वचालित गारंटी नहीं है। यिर्मयाह 29, श्लोक 11 से श्लोक 14 तक, कहता है, जब वे प्रभु की ओर फिरेंगे, और वे उन्हें पूरे मन से खोजेंगे तो प्रभु उन्हें पुनर्स्थापित करेगा।

इसलिए, प्रभु ने बाबुल में रहने वाले निर्वासितों को पुनर्स्थापना का वादा दिया है, लेकिन यह कोई स्वचालित चीज़ नहीं है। उन्हें ईश्वर की ओर मुड़ना होगा और जब वे ईश्वर की ओर मुड़ेंगे और जब वे ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी होंगे और जब वे खुद को विनम्र करेंगे और अपने अतीत के लिए पश्चाताप करेंगे, तभी उन्हें आशीर्वाद मिलेगा। निर्वासन के तत्काल बाद भूमि में रहने वाले लोगों को उस आशीर्वाद का अनुभव नहीं हुआ जो भगवान ने उनके लिए किया था क्योंकि अवज्ञा के दो विशाल कार्य थे जो अतीत से जारी थे और जो डेविड के घराने और उनके विरोध को प्रतिबिंबित करते रहे। ईश्वर।

मैं एक और महत्वपूर्ण समानता का उल्लेख करना चाहता हूँ क्योंकि हम यिर्मयाह 26 से 45 को देख रहे हैं और विशेष रूप से 30 से 33 में पुनर्स्थापना और अध्याय 40 से 43 में होने वाले निर्णय के बीच विरोधाभास के बारे में सोच रहे हैं। हमने विभिन्न प्रकार की कथात्मक समानता देखी है जिस तरह से कथावाचक लोगों द्वारा प्रभु के वचन के प्रति निरंतर अवज्ञा की कहानी कहता है, उसके लिए ये बहुत महत्वपूर्ण हैं। अन्य प्रकार की समानताओं में से एक जो उनके आवर्ती और बार-बार होने वाले पाप के बारे में यह बात जारी रखेगी, वह यह है कि विशिष्ट तरीकों से, वर्णनकर्ता अध्याय 40 से 43 में होने वाले पापों का वर्णन इस तरह से करने जा रहा है जो सीधे तौर पर हमें कृत्यों की याद दिलाते हैं। यिर्मयाह कथाओं में अन्य स्थानों पर यरूशलेम के पतन से पहले अवज्ञा की।

सबसे पहले आइए इस बारे में सोचें। अध्याय 26 में, यहोयाकीम ने भविष्यवक्ता ऊरिय्याह को तलवार से मार डाला। अध्याय 41 में, यह दाऊद के घराने के सदस्य के रूप में इश्माएल है जो तलवार से हत्या करता है और वह गदल्याह को मार डालता है।

जब यहोयाकीम एक भविष्यवक्ता की हत्या करके इस भयानक हत्या को अंजाम देता है, तो यह कहता है कि उसने उसके शरीर को एक सामान्य दफन स्थान पर फेंक दिया। जब इश्माएल उत्तरी राज्य से पूजा करने आए 70 लोगों को मारता है, और यह सिर्फ एक घृणित, विश्वासघाती कार्य है, तो वह उनके शवों को एक कुएं या कुंड में फेंक देता है। अध्याय 38 में, जब सैन्य अधिकारियों को यह तथ्य पसंद नहीं आया कि यिर्मयाह युद्ध के प्रयासों को हतोत्साहित कर रहा था, तो उन्होंने उसे एक कुएं, एक हौज, हिब्रू शब्द बोर में फेंक दिया। इश्माएल ने 70 शवों को एक हौद, एक बोर, अध्याय 41, पद 7 में फेंक दिया। यरूशलेम के पतन से ठीक पहले के दिनों में, सिदकिय्याह ने मदद के लिए मिस्र का रुख किया।

उनका मानना था कि अगर मिस्र इस सब में शामिल हो जाए, तो शायद दबाव कम हो जाए और शायद बेबीलोनवासी चले जाएं। लेकिन यह कारगर नहीं हुआ। यिर्मयाह ने कहा, देखो, अगर मिस्रियों के पास सिर्फ कुछ घायल सैनिक ही बचे हों, तो भी वे तुम्हें हरा पाएंगे।

निर्वासन के बाद, अध्याय 42 और 43 में, योहानान और उसके अधिकारी मिस्र चले जाते हैं क्योंकि उनका मानना है कि मिस्र उनकी सुरक्षा का स्रोत है। यह सिदकिय्याह के लिए काम नहीं आया, और यह योहानान के लिए भी काम नहीं आया। जब यिर्मयाह 38 में सैन्य अधिकारी बेबीलोन के सामने आत्मसमर्पण करने के उसके संदेश को अस्वीकार करते हैं, तो उनका दावा है कि यिर्मयाह एक गद्दार है।

वह बेबीलोनियों के पास जा रहा है। वह युद्ध के प्रयासों को कमजोर कर रहा है। जब योहानान और सैन्य अधिकारी यिर्मयाह की सलाह सुनते हैं कि उन्हें देश में ही रहना चाहिए और बेबीलोन के राजा के अधीन रहना चाहिए, तो वे कहते हैं, तुम झूठे हो।

वे उस पर शेकर का आरोप लगाते हैं, वही बात जो यिर्मयाह ने झूठे भविष्यवक्ताओं के संदेश के बारे में कही है। और वे आगे बढ़ते हैं और उसमें जोड़ते हैं, वे कहते हैं, आप हमें यहाँ रहने के लिए कह रहे हैं क्योंकि बारूक, अब वे बारूक को दोषी ठहरा रहे हैं, बारूक हमें बेबीलोनियों को बेचने की कोशिश कर रहा है। इसलिए, हम पुराने नियम में जो देखते हैं वह प्रभु के प्रति निरंतर अवज्ञा का एक निराशाजनक इतिहास है।

यिर्मयाह की पुस्तक में हम जो देखते हैं वह यरूशलेम के पतन से पहले अवज्ञा का एक निराशाजनक इतिहास है, लोगों ने प्रभु के वचन को नहीं सुना। यरूशलेम के पतन के बाद, लोगों ने प्रभु के वचन को नहीं सुना। वे वही पाप करते रहते हैं।

और इस प्रकार हम एक शक्तिशाली विरोधाभास के साथ यिर्मयाह 26 से 45 तक पहुँचते हैं। उन दिनों में होने वाली पुनर्स्थापना की आशा निर्वासन के तत्काल बाद जो हो रहा है उसकी वास्तविकता है। और फिर, मुद्दा प्रभु के वचन की प्रतिक्रिया का होने जा रहा है।

प्रभु ने वादा किया है कि बहाली होगी। यहोवा ने प्रतिज्ञा की है कि इस्राएल को आशीष मिलेगी। प्रभु ने वादा किया है कि निर्वासित ही अच्छे समाधानकर्ता हैं।

और मैं जानता हूँ कि मेरे पास आपके लिए क्या योजनाएं हैं, आपको आशा और भविष्य देने की योजनाएं हैं, लेकिन यह कैसे काम करेगा इसका इतिहास बहुत जटिल और पेचीदा होने वाला है। वे इस मुक्ति का अनुभव तब तक नहीं करेंगे जब तक वे प्रभु की तलाश नहीं करते और पूरे दिल से उनकी ओर नहीं मुड़ते। यिर्मयाह की पुस्तक पर लिखने वाला एक लेखक अंतहीन निर्वासन के धार्मिक विचार पर टिप्पणी करता है।

यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की कि भूमि पर वापसी 70 वर्षों में होगी। लेकिन जब हम इसे पढ़ते हैं तो हमें यह विचार मिलता है कि इज़राइल की वास्तविक बहाली, जिसकी कल्पना अध्याय 30 से 33 में की गई है, उसके लंबे समय बाद तक भी नहीं हो सकती है। हम डैनियल अध्याय नौ पर आते हैं, और मैं इस खंड पर अंतिम प्रतिबिंब के साथ इसे समाप्त करूंगा।

डैनियल अध्याय नौ में, डैनियल, जैसे कैद के दिन समाप्त हो रहे हैं, यिर्मयाह की भविष्यवाणियों को पढ़ता है कि निर्वासन 70 वर्षों तक चलेगा। वह जानता है कि उनके लौटने का समय निकट आ गया है। और इसलिए, वह प्रार्थना करना शुरू कर देता है कि परमेश्वर उसकी वाचा के वादों को पूरा करेगा।

वह इसे तत्काल गारंटी के रूप में नहीं लेता है कि चाहे कुछ भी हो, यह स्वचालित रूप से होने वाला है। यह तब होगा जब हम ईश्वर को खोजेंगे, जब हम उसकी ओर मुड़ेंगे। वह लोगों के पापों को स्वीकार करता है और ईश्वर से अपना वादा पूरा करने के लिए प्रार्थना करता है।

लेकिन उस प्रार्थना के जवाब में, भगवान उसे एक और दृष्टि देते हैं। और भगवान पुनरुद्धार के समय के बारे में और विस्तार से बताते हैं। और वह कहता है, हे दानियेल, इस्राएल के लिये सात वर्ष में से सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं।

वे 70 साल में वापस ज़मीन पर आएँगे। परन्तु वह समय जब परमेश्वर उन्हें पूरी तरह से पुनर्स्थापित करने जा रहा है, जहाँ परमेश्वर अपराध को समाप्त करने जा रहा है और अपने लोगों के साथ वाचा को नवीनीकृत करने जा रहा है, वह भविष्य में इस सुदूर समय तक नहीं आएगा। इस्राएल को तब तक मुक्ति के आशीर्वाद का अनुभव नहीं होगा जब तक कि वे पूरे दिल से परमेश्वर की खोज नहीं करते।

हम इसे यिर्मयाह में ही देख सकते हैं। यह सिर्फ डैनियल द्वारा हम पर थोपा गया एक विदेशी विचार नहीं है। हम देखते हैं कि यिर्मयाह की पुस्तक में दिए गए विरोधाभास में, अध्याय 30 से 33 के वादे और अध्याय 40 से 43 में निर्वासन के बाद के दिनों में क्या हो रहा है इसकी वास्तविकता है।

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 25, यिर्मयाह 30-33, सांत्वना की पुस्तक और निर्वासन के बाद की स्थिति है।